संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। मैं आप सभी को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम से नमस्कार करती हूं।

व्यवस्थाविवरण 30:20 कहता है, ''इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानों, और उस से लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घ जीवन यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा।''

जब आप अपने परमेश्वर से प्यार करते हैं और उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और उनसे दृढ़ता से रहते हैं, तो वह आपको जीवन प्रदान करेंगे– और वह भी एक लंबा जीवन। निश्चित रूप से अच्छाई और दया आपके जीवन के सभी दिनों में आपके साथ रहेंगी, और आप हमेशा के लिए प्रभु के घर में निवास करेंगे। जब आप प्रभु से प्यार करते हैं, तो वह आपको एक लंबा जीवन देते है – डॉक्टरों के साथ, दवाइयों या टॉनिक के साथ जीवन प्रधान नहीं करते। निर्गमन 15:26 ''कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजा है उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं।''

कौन आपके जीवन को विनाश से मुक्त करता है, कौन आपको प्यार और दया के साथ ताज पहनाता है, कौन आपके मुंह को अच्छी चीजों से संतुष्ट करता है, ताकि आपके युवापन को उकाब की तरह नया किया जाए? अय्यूब के जीवन को देखें। उसने अपने सभी बच्चों और पशुओं को खो दिया। सिर से पाँव तक घावों से भरा हुआ, फिर भी अय्यूब ने परमेश्वर पर कोई दोष नहीं लगाया। क्या हम वास्तव में अच्छे परमेश्वर को स्वीकार करते हैं, और क्या हम विपत्ति को स्वीकार नहीं करेंगे? अय्यूब 2:10 ''उसने उस से कहा, तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है,

क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें? इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया।'' अय्यूब ने यह भी कहा 'मैं अपनी मां के गर्भ से नंगा आया था और नंगा होकर मैं वहां लौटूंगा।' प्रभु ने दिया और प्रभु ने लिया।' जब उसने अपना सब कुछ खो दिया, तब भी अय्यूब ने प्रभु से प्रेम किया।

अंत में प्रभु ने दो गुना के साथ आशीर्वाद दिया। अय्यूब 42:16–17 ''16 इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और चार पीढ़ी तक अपना वंश देखने पाया। 17 निदान अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु हो कर मर गया।''

बाइबल कहता है भजन संहिता 91:16 ''मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा, और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा।'' प्रभु के द्वारा आपके दिन कई गुना बढ़ जाएंगे और उनके द्वारा आपकी लंबी आयु होगी।

भजन संहिता लिखने वाला दाऊद, जो प्रभु से प्यार करता था लिखता है भजन संहिता 21:4 ''उसने तुझ से जीवन मांगा, ओर तू ने जीवन दान दिया; तू ने उसको युगानुयुग का जीवन दिया है।''

यदि आप हमारे अच्छे चरवाह में विश्वास करते हैं, तो आपके पास शांति और आनंद, जीवन और लंबा जीवन होगा। जो उस पर भरोसा करेगा, वह नष्ट नहीं होगा।

हमारे अच्छे प्रभु आपको आशीर्वाद दे और जब तक हम फिर से मिलेंगे, तब तक आपको उनकी प्रेमपूर्ण देखभाल के अधीन रखेंगे।

आपकी मेरे प्रभु यीशु की सेवा में,

पास्टर सरोजा म.

अपने अंदर प्रभु की शांति के लिए प्रार्थना करें।

भजन संहिता 122: 6 ''यरूशलेम की शान्ति का वरदान मांगो, तेरे प्रेमी कुशल से रहें!'' यहां इस वचन में, प्रभु हमें यरूशलेम की शान्ति के लिए प्रार्थना करने के लिए कहते हैं, इस प्रकार लोग समृद्ध होंगे और खुशी में रहेंगे। बाइबल में, प्रभु ने हमें प्रार्थना करने के लिए कई प्रार्थनाओं की मांग दी हैं। यहां विशेष रूप से, प्रभु ने हमें यरूशलेम की शान्ति के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया है। सबसे पहले यरूशलेम का मतलब है कि हमारा शरीर प्रभु के लिए 'प्रार्थना का घर' है, इस प्रकार 'हमारा दिल' प्रभु के लिए यरूशलेम है। दूसरा, यरूशलेम इस्राएल की राजधानी है। तीसरा, प्रभु दुल्हन की तैयारी कर रहे है यानी 'नया यरूशलेम'। 'यरूशलेम' का पूर्ण अर्थ 'शांति' है। इसलिए, प्रभु हमें यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध करते है। सबसे पहले शांति स्वयं हमारे भीतर से आनी चाहिए, केवल तभी हम इसे दुनिया के सिरों तक साझा कर सकते हैं। यह केवल हमारे प्रभु परमेश्वर के माध्यम से हमें 'शांति' मिलती है। इस प्रकार, यीशु ने कहा, मेरी आत्मा तुम्हारे ऊपर उंडेली जाएगी, तो तुम यरूशलेम में गवाह होंगे यानी खुद, यहूदा यानी 'हमारा परिवार' और सामरिया यानी 'गैर–यहूदी'। इस प्रकार, प्रभु हम में से प्रत्येक के जीवन में प्रवेश करते है, हालांकि हम कितनी ही गहरी परेशानी, दर्द और दुःख में क्यों न हो, जैसा कि हमने पढ़ा है भजन संहिता 122: 6 ''यरूशलेम की शान्ति का वरदान मांगो, तेरे प्रेमी कुशल से रहें!'' दाऊद के कई दुश्मन थे, अपने जीवन की हर परिस्थितियों में उसने स्वयं में प्रभु से शांति प्राप्त की। उसने प्रभु में अपने विश्वास को बहुत मजबूत किया। किसी भी तरह से हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यरूशलेम के लोगों को पीड़ा, दर्द और दुख नहीं है। वास्तव में, उन्हें अपने जीवन में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। परन्तु जब प्रभु की शांति, उनकी आत्मा के माध्यम से, किसी भी व्यक्ति में प्रवेश करती है, तो पहले यह यरूशलेम में, फिर यहूदा में और अंत में सामरिया में शांति लाती है।

जब प्रभु की शांति स्वयं के भीतर होती है, तो हम आसानी से क्रोधित नहीं होंगे, हम आसानी से परेशान नहीं होंगे। हम शास्त्रों में जानते हैं, कई लोग यीशु से उस प्रार्थना को सिखाने के लिए

कहते हैं जिन्हें यूहन्ना ने प्रार्थना करने के लिए सिखाया था। इसलिए यीशु ने उन्हें सिखाया कि प्रार्थना कैसे करना चाहिए। इसके बाद, यीशु ने बंधन से एक आदमी को मुक्त कराया। लेकिन उनके अनुसरण करने वाले लोगों के दो समूह थे, 1) जो लोग चमत्कार देखने और उन पर विश्वास करने में खुश थे। 2) एक और समूह – जिसने कहा कि बेल्जबूब की शक्ति से, यीशु ने इस आदमी को बंधन से बचाया था। जब यीशु ने यह सुना, तो वह लोगों से बहुत नाराज थे। यद्यपि वह 'राजाओं का राजा' और 'शांति का राजकुमार' है, वह पूरे मानव जाति को 'शांति' देने के लिए आया था। फिर भी, यीशु यह सुनकर नाराज थे कि सदूकी, फरीसी और याजक उनके बारे में क्या कहते हैं। यीशु ने वहां किसी को भी नहीं बक्शा, उन्होंने उन सभी को खुलेआम और कठोर रीत से बात की। लेकिन उनकी वास्तविक योजना क्या थी? उनकी असली योजना यीशु को क्रोधित करना और उन्हें अपना धैर्य खोने पर मजबूर करना था। तत्काल, इस घटना के बाद, एक आदमी यीशु को अपने निवास में दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित करता है। यीशु निमंत्रण स्वीकार करते है और उसके घर जाते है। मेज पर, यीशु ने दोपहर के भोजन से पहले अपने हाथ नहीं धोए थे, इसलिए फरीसियों ने फिर से यीशु को मुश्किल में डालने का मौका देखा, उन्होंने उनसे पूछा, 'क्या आपके लिए हाथ धोने के बिना दोपहर के भोजन के लिए बैठना सही है'। फिर यीशु क्रोधित हुए और खुलेआम और कठोर रीत से चारों ओर खड़े सब लोगों पर नाराज़ हुए। तो, घर में इकट्ठे हुए उनमें से एक ने यीशु से पूछा, ''आप खुलेआम और दृढ़ता से क्यों चिल्लाते हैं?'' यह आदमी यीशु में विश्वास करता था और वह उनसे प्यार करता था, इस प्रकार वह यीशु से यह सवाल पूछता है। लेकिन, यीशु ने किसी को भी नहीं बक्शा, याजकों से लेकर उसके आस–पास इकट्ठे हुए सभी आम लोगों तक, उन्होंने उनसे खुलेआम और कठोर रीत से बात की। इस प्रकार, हमें यह समझना चाहिए कि यीशु को 'शांति का राजकुमार' कहा जाता है, लेकिन लोगों को खुश करने के लिए सांसारिक तरीकों से नहीं। यीशु निश्चित रूप से इस धरती पर शांति फैलाने आए थे, उनके बच्चों के लिए जो उन पर विश्वास करते हैं। उनके चुने हुए लोग जिन्होंने उनके आदेशों का पालन किया, उनके लिए वह 'शांति के राजकुमार' है। लेकिन पूरी दुनिया के लिए नहीं। हम इस दुनिया में पापी हैं, लूका 11 में हम देखते हैं कि कैसे यीशु ने मुख्य याजक, फरीसियों या सदूकी लोगों को नहीं छोड़ा, लेकिन उन सभी को कड़े और खुलेआम कठोर रीत से बात की। आइए हम पढ़ते है लूका 11: 1–54 ''1 फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था: और जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उस से कहा; हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे। 2 उस ने उन से कहा; जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो; हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। 3 हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर। 4 और हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं, और हमें परीक्षा में न ला। 5 और उस

ने उन से कहा, तुम में से कौन है कि उसका एक मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास
आकर उस से कहे, कि हे मित्र; मुझे तीन रोटियां दे। 6 क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया
है, और उसके आगे रखने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। 7 और वह भीतर से उत्तर दे, कि मुझे
दुख न दे; अब तो द्वार बन्द है, और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं, इसलिए मैं उठकर तुझे
दे नहीं सकता 8 मैं तुम से कहता हूं, यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, तौभी
उसके लज्ज़ा छोड़कर मांगने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उठकर देगा। 9 और
मैं तुम से कहता हूं; कि मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ों तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे
लिए खोला जाएगा। 10 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता
है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा। 11 तुम में से ऐसा कौन पिता होगा, कि
जब उसका पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर देः या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे?
12 या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे? 13 सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के–बालों को अच्छी
वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा। 14
फिर उस ने एक गूंगी दुष्टात्मा को निकालाः जब दुष्टात्मा निकल गई, तो गूंगा बोलने लगा; और
लोगों ने अचम्भा किया। 15 परन्तु उन में से कितनों ने कहा, यह तो शैतान नाम दुष्टात्माओं के
प्रधान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है। 16 औरों ने उस की परीक्षा करने के लिए
उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा। 17 परन्तु उस ने, उन के मन की बातें जानकर, उन से
कहा; जिस जिस राज्य में फूट होती है, वह राज्य उजड़ जाता हैः और जिस घर में फूट होती है,
वह नाश हो जाता है। 18 और यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य क्योंकर
बना रहेगा? क्योंकि तुम मेरे विषय में तो कहते हो, कि यह शैतान की सहायता से दुष्टात्मा
निकालता है। 19 भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारी
सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। 20 परन्तु यदि
मैं परमेश्वर की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ
पहुंचा। 21 जब बलवन्त मनुष्य हथियार बान्धे हुए अपने घर की रखवाली करता है, तो उस की
संपत्ति बची रहती है। 22 पर जब उस से बढ़कर कोई और बलवन्त चढ़ाई करके उसे जीत लेता
है, तो उसके वे हथियार जिन पर उसका भरोसा था, छीन लेता है और उस की संपत्ति लूटकर
बांट देता है। 23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह
बिथराता है। 24 जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती
फिरती है; और जब नहीं पाती तो कहती है; कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी लौट
जाऊंगी। 25 और आकर उसे झाड़ा–बुहारा और सजा–सजाया पाती है। 26 तब वह आकर अपने
से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उस में पैठकर वास करती हैं,
और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है। 27 ऐसा हुआ कि जब वह ये

बातें कह ही रहा था तो भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से उस से कहा, ''धन्य है वह गर्भ जिसमें तू रहा और वे स्तन जिनसे तेरा पोषण हुआ।'' 28 उस ने कहा, हां; परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं। 29 जब बड़ी भीड़ इकट्ठी होती जाती थी तो वह कहने लगा; कि इस युग के लोग बुरे हैं; वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं; पर योना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा। 30 जैसा योना नीनवे के लोगों के लिए चिन्ह ठहरा, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस युग के लोगों के लिए ठहरेगा। 31 दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के मनुष्यों के साथ उठकर, उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथ्वी की छोर से आई, और देखो यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। 32 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खड़े होकर, उन्हें दोषी ठहराएंगे; क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया और देखो, यहां वह है, जो योना से भी बड़ा है। 33 कोई मनुष्य दीया बार के तलघरे में, या पैमाने के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आने वाले उजियाला पाएं। 34 तेरे शरीर का दीया तेरी आंख है, इसलिए जब तेरी आंख निर्मल है, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है; परन्तु जब वह बुरी है, तो तेरा शरीर भी अन्धेरा है। 35 इसलिए चौकस रहना, कि जो उजियाला तुझ में है वह अन्धेरा न हो जाए। 36 इसलिए यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो, ओर उसका कोई भाग अन्धेरा न रहे, तो सब का सब ऐसा उलियाला होगा, जैसा उस समय होता है, जब दीया अपनी चमक से तुझे उजाला देता है। 37 जब वह बातें कर रहा था, तो किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे यहां भेजन कर; और वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा। 38 फरीसी ने यह देखकर अचम्भा दिया कि उस ने भोजन करने से पहिले स्नान नहीं किया। 39 प्रभु ने उस से कहा, हे फरीसियों, तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो, परन्तु तुम्हारे भीतर अन्धेर और दुष्टता भरी है। 40 हे निर्बुद्धियों, जिस ने बाहर का भाग बनाया, क्या उस ने भीतर का भाग नहीं बनाया? 41 परन्तु हां, भीतरवाली वस्तुओं को दान कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिए शुद्ध हो जाएगा। 42 पर हे फरीसियों, तुम पर हाय ! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भांति के साग–पात का दसवां अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते होः चाहिए तो था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते। 43 हे फरीसियों, तुम पर हाय ! तुम आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कार चाहते हो। 44 हाय तुम पर ! क्योंकि तुम उन छिपी कब्रों के समान हो, जिन पर लोग चलते हैं, परन्तु नहीं जानते। 45 तब एक व्यवस्थापक ने उस को उत्तर दिया, कि हे गुरू, इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है। 46 उस ने कहा; हे व्यवस्थापकों, तुम पर भी हाय ! तुम ऐसे बोझ जिन को उठाना कठिन है, मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उंगली से भी नहीं छूते। 47 हाय तुम पर ! तुम उन भविष्यद्वक्तओं की कब्रें बनाते हो, जिन्हें ही तुम्हारे बाप–दादों ने मार डाला था। 48 सो तुम गवाह हो, और अपने बाप–दादों के

कामों में सहमत हो; क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कब्रें बनाते हो। 49 इसलिएपरमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, कि मैं उन के पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूंगीः और वे उन में से कितनों को मार डालेंगे, और कितनों को सताएंगे। 50 ताकि जितने भविष्यद्वक्ताओं का लहू जगत की उत्पत्ति से बहाया गया है, सब का लेखा, इस युग के लोगों से लिया जाए। 51 हाबील की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक जो वेदी और मन्दिर के बीच में घात किया गयाः मैं तुम से सच कहता हूं; उसका लेखा इसी समय के लोगों से लिया जाएगा। 52 हाय तुम व्यवस्थापकों पर ! कि तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो ली, परन्तु तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करने वालों को भी रोक दिया। 53 जब वह वहां से निकला, तो शास्त्री और फरीसी बहुत पीछे पड़ गए और छेड़ने लगे, कि वह बहुत सी बातों की चर्चा करे। 54 और उस की घात में लगे रहे, कि उसके मुंह की कोई बात पकड़ें।'' यीशु इन दुष्ट लोगों की सभी चालाक योजनाओं को जानते थे, कैसे उन्होंने दुष्टता से बात करने और यीशु को क्रोधित करने की योजना बनाई। यीशु जानते थे कि इन लोगों ने सभी पूर्व भविष्यद्वक्ताओं के साथ क्या किया था, दुष्ट रूप से उन्होंने योजना बनाई और उन्हें मार डाला। इसलिए, जब हमारे प्रभु कहते हैं 'यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करों, तो उनका मतलब है कि पहले सवयं के शांति के लिए प्रार्थना करों। जब हम प्रभु के वचन को जानते हैं और वचन के अनुसार हमारे जीवन जीने का प्रयास करते हैं, तो इसका मतलब यरूशलेम है। एक बार जब शांति यरूशलेम में प्रवेश करती है, तो यह इस प्रकार यहूदा और फिर सामरिया में फैल जाएगी।एक बार यीशु ने यरूशलेम को देखा, तो यीशु रो पड़े और कहा, चलिए पढ़ते है लूका 19: 42 ''और कहा, क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं।'' यदि आप शांति क्या है जानते, तो यह आपके लिए बेहतर होता, लेकिन अब यह आपकी आंखों से छिपा हुआ है। हम में से कई लोग खुद को प्रभु के बच्चे कहते हैं, लेकिन हमारे काम प्रभु के बच्चों से कई दूर हैं। हमारा प्रभु यह जानने के लिए आए है कि क्या खो गया है। तो जब हम प्रभु से मिलने के लिए कलीसिया आते हैं, तो प्रभु जानते है कि हम उनके सामने किस ह्रदय से आते हैं। हमें प्रभु को कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं है, वह सब कुछ जानता है इससे पहले की हम कुछ करें, क्योंकि हमने उसे नहीं चुना है बल्कि उसने हमें चुना है और हमें पहले प्यार किया है। इस प्रकार जब हम अपने आप को प्रभु के हाथों में देते हैं, तो हम उसके बच्चे बन सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम घी कैसे बनाते हैं? दूध को दही में परिवर्तित किया जाना चाहिए, दही को सफेद मक्खन प्राप्त करने के लिए अच्छी तरह से मंथन की जरूरत होती है और फिर हम सफेद मक्खन को आग में पकाते हैं, तब यह घी में बन जाता है। इसी तरह, अगर हमें प्रभु के पात्र के रूप में इस्तेमाल होना है, तो हम उसके खातिर परीक्षण, परखे जाने और भट्ठी की आग से गुजरना आवशयक है। प्रभु के लिए एक योग्य पात्र बनने के लिए, हमें केवल उनके द्वारा तैयार

होना चाहिए। उपर्युक्त वचन में हमने पढ़ा है कि एक महिला चिल्लाती है और कहती है, **''धन्य है वह गर्भ जिसमें तू रहा और वे स्तन जिनसे तेरा पोषण हुआ।''** लेकिन यीशु ने वचन 28 में जवाब दिया ''उस ने कहा, हां; परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।'' उस समय भी यीशु ने अपने व्यवहार में कोई राजनीति नहीं दिखाई, बल्कि उसने सबकुछ स्पष्ट रूप से कहा। यीशु के बाद भी, हर भविष्यवक्ता को जो इस दुनिया में भेजे गए, वही काम किए जो प्रभु ने इस दुनिया में किए। इस प्रकार, यीशु ने कहा कि इस के लिए कई भविष्यवक्ताओं को शहीद किया गया था। यह एक जानने वाला सत्य है कि किसी भी सच्चे भविष्यद्वक्ता को कभी भी स्वीकार नहीं किया गया है या अपने देश में मान्यता प्राप्त नहीं हुई है। कल्पना कीजिए कि राजाओं के राजा और शांति के राजकुमार को इस दुनिया में शांति फैलाने के लिए भेजा गया था, ताकि हमें इस दुनिया के अंधेरे से अलग किया जा सके, ताकि हमें हमारे पापों से बचाया जा सके। यीशु को इस दुनिया में सभी कुटिल रास्तों को सीधे बनाने के लिए भेजा गया था। लेकिन, किसी ने भी प्रभु पर विश्वास नहीं किया और इस दुनिया में उनके मार्गों का स्वीकार नहीं किया। अंत में, उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और बरनबास को छोड़ दिया। यह दुनिया है, यह शुरुआत से आज तक एक ही दुनिया है। दुनिया नहीं बदली है, न ही इसके लोग, वे अभी भी 'सत्य' को नहीं जानते हैं। यीशु कहते है ''जो मेरे लिए नहीं हैं वे मेरे खिलाफ हैं''। जब हम सच्चाई को जानते हैं, तो सत्य हमें मुक्त कर देगा।

हम सभी को 'सांप और सीढ़ी' का खेल पता है। एक शुरुआती स्थान है, हमें पासा घूमना है ताकि अंक सीढ़ी के नीचे गिर जाए और हम सीढ़ी पर चढ़ सकें। यदि अंक सांप वर्ग में जाता है, तो खिलाड़ी हालांकि कितना ही ऊँचे स्थान पर क्यों न हो वह पूंछ की नोक पर गिर जाता है। यदि अंक फिर से सीढ़ी पर पड़ता है, तो खिलाड़ी सीढ़ी के शिखर तक पहुंच जाता है। इसी प्रकार, जीवन में, हमारी एक गलती हमें इसी तरह के रूप में ला सकती है। जब कि अगर हम प्रभु के लिए कड़ी मेहनत करते हैं तो वह हमें ऊपर उठाकर ऊँचा उठा सकते है। खेल फिर से शुरू होता है और खिलाड़ी को फिर से शुरू करना पड़ता है। हमें कभी सोचना नहीं चाहिए कि हम हर शनिवार या रविवार को कलीसिया आते हैं, इस प्रकार हम प्रभु से विशेष आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। ऐसा नहीं है, प्रभु की आंखों में जो सही है वह सही है, जो गलत है वह गलत है, जो सत्य है वह सत्य है, और झूठ झूठ ही है। इस के बारे में कोई दो तरीके नहीं हैं। वह प्रभु है, स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता हैं, हमें प्रभु की शक्ति को पहचानना चाहिए, किसी को भी प्रभु के क्रोध और प्रकोप से बचाया नहीं जा सकता है। हमारे दिल में, हमें हमेशा प्रभु से डरना चाहिए। आइए हम दोबारा पढ़े लूका 19: 42 ''और कहा, क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं।'' हमें खुद को प्रभु के हाथों

में सौप देना चाहिए। वह सब काम जो हमें उसकी महिमा के लिए करने की ज़रूरत है, वह अकेले ही हमें परिणामों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन करेंगे।

हमें 'शांति' के साथ आशीर्वाद देने के लिए, हमारे प्रभु ने कैल्वरी के क्रूस पर अपना जीवन दिया। उसने हमारे अपराधों को दूर कर दिया, वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया। आइए पढ़ते है यशायाह 53: 5 ''परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।'' यीशु क्रूस पर मरे ताकि हमें हमारे पापों से अलग कर सकें। इस प्रकार, प्रभु ने अपनी आत्मा के माध्यम से, हमारे जीवन में शांति का फल निर्माण किया।

हर मानव के जीवन में अनुग्रह, दया और शांति बहुत आवश्यक गुण हैं। प्रभु ने हमसे प्यार किया, वह हमारे लिए उनकी कृपा है। प्रभु ने क्रूस पर अपना जीवन दिया, हम पर उनकी दया और शांति प्रभु से महान आशीर्वाद का फल है। जब ये सभी तीन चीजें एक व्यक्ति में होती हैं, तो वे धन्य होते हैं। प्रेरित पौलुस लिखते है 1 तीमुथियुस 1: 2 '' पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु से, तुझे अनुग्रह और दया, और शान्ति मिलती रहे।'' जीवन में, हम केवल हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के माध्यम से अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त कर सकते हैं। हमारा प्रभु भी हमें शांति देना चाहते है। इस प्रकार, प्रेरित पौलुस लिखता है कि यह केवल पिता परमेश्वर और यीशु मसीह हमारे प्रभु के माध्यम से है की हम भी शांति से आशीषवान होंगे। 2 तीमुथियुस 1: 2 कहता है ''प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।'' जैसे कि एक शारीरिक शरीर, आत्मा और जीवन किसी व्यक्ति में समान है, वैसे ही हमारे जीवन में हमें प्रभु की कृपा, दया और शांति की आवश्यकता है।

इफिसियों 6: 15 कहता है ''और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर।'' जब हमें कृपा, दया और शांति से आशीर्वाद मिलता है, तो हमें शांति का सुसमाचार प्रचार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें जीवन में संकोच नहीं करना चाहिए और हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए। जब हम तैयार नहीं होते हैं, तो प्रभु इसे हमसे ले सकते हैं और इसे जो तैयार है उस व्यक्ति को दे सकते हैं। इस प्रकार प्रभु जिसे चुनते है, ऐसा पात्र जो सामरिया, यहूदा और पृथ्वी के छोर तक शांति का सुसमाचार ले जाने के लिए तैयार है। इस प्रकार, जो लोग कृपा, दया और शांति से धन्य हैं, उन्हें हर समय तैयार रहना चाहिए। बाइबिल कहता है नीतिवचन 16: 25 ''ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।''

जिस मार्ग को व्यक्ति चुनता है, वह उसके अनुसार सही प्रतीत होता है, लेकिन वास्तव में यह मृत्यु का मार्ग हो सकता है। हाँ, नरक में जाने के लिए, कई मार्ग हैं। लेकिन प्रभु के राज्य में प्रवेश करने के लिए केवल एक ही रास्ता है। आइए पढ़ते है यूहन्ना 14: 6 ''यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' नरक के रास्ते का चुनाव करना आसान है, लेकिन स्वर्ग के रास्ते को चुनना मुश्किल है। याद रखें, अगर हम प्रभु के लिए शुद्ध घी बनना चाहते हैं, तो हमें घी बनाने की पूरी प्रक्रिया के माध्यम से जाना होगा जैसे की ...दूध, दही, मारना और मंथन करना, मक्खन को घी बनने के लिए आग में पकना चाहिए। 'सांप और सीढ़ी' के खेल को भी याद रखें, जब हम प्रभु के वचन को सुनते हैं तो हम सीढ़ी पर चढ़ जाएंगे और ऊपर पहुंचेंगे, जब कि अगर हम प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे तो हम सांपों के मुंह में जाएंगे और बड़ी ऊंचाई से गिरेंगे। यीशु ही 'मार्ग, सत्य और जीवन' है, इस प्रकार हमें प्रभु के हर वचन का पालन करने की आवश्यकता है।

हर मानव जीवन में, अतीत महत्वपूर्ण नहीं है और न ही वर्तमान है, लेकिन हम अपने भविष्य को जीने की योजना कैसे बनाते हैं, यह प्रभु के लिए महत्वपूर्ण है। पवित्र शास्त्रों में, हम सुलैमान– बुद्धिमान व्यक्ति की कहानी जानते हैं। प्रभु ने उसे बचपन से बेहद आशीर्वाद दिया। जो कुछ भी वह चाहता था, प्रभु ने उसे सब कुछ सम्मानित किया। लेकिन बाद में अपने जीवन में, हम जानते हैं कि उनकी कई पत्नियां और रखेलियाँ थीं। प्रभु ने फिर भी उसे माफ़ कर दिया। यहां तक कि जब उसने उनसे विवाह किया, तब भी प्रभु नाराज नहीं थे, लेकिन, जब उसने अपनी पत्नियों और रखेलियों के अन्य देवताओं की पूजा करना शुरू किया, और उन्हें आराधना के लिए एक वेदी बना दिया। इस चीज़ ने परमेश्वर को बहुत नाराज कर दिया और परमेश्वर का क्रोध सुलैमान पर आया और यह परमेश्वर की आंखों में मनभावना नहीं था। हमें कभी भी सच्चाई का रास्ता नहीं भूलना चाहिए और अंधेरे के रास्ते पर यात्रा नहीं करनी चाहिए। आइए हम पढ़ते है 1 राजा 11: 1 –11 ''1 परन्तु राजा सुलैमान फ़िरौन की बेटी, और बहुतेरी और पराएस्त्रियों से, जो मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोनी, और हित्ती थीं, प्रीति करने लगा। 2 वे उन जातियों की थीं, जिनके विषय में यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, कि तुम उनके मध्य में न जाना, और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएं, वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर निःसन्देह फेरेंगी; उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया। 3 और उसके सात सौ रानियां, और तीन सौ रखेलियां हो गई थीं और उसकी इन स्त्रियों ने उसका मन बहका दिया। 4 सो जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब उसकी स्त्रियों ने उसका मन पराएदेवताओं की ओर बहका दिया, और उसका मन अपने पिता दाऊद की नाईं अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा। 5 सुलैमान तो सीदोनियों की अशतोरेत नाम देवी, और अम्मोनियों के मिल्कोम नाम घृणित देवता के पीछे चला। 6 और सुलैमान ने वह किया

जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद की नाईं पूरी रीति से न चला। 7 उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम के साम्हने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश नाम घृणित देवता के लिए और अम्मोनियों के मोलेक नाम घृणित देवता के लिए एक एक ऊंचा स्थान बनाया। 8 और अपनी सब पराएस्त्रियों के लिए भी जो अपने अपने देवताओं को धूप जलातीं और बलिदान करती थीं, उसने ऐसा ही किया। 9 तब यहोवा ने सुलैमान पर क्रोध किया, क्योंकि उसका मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से फिर गया था जिसने दो बार उसको दर्शन दिया था। 10 और उसने इसी बात के विषय में आज्ञा दी थी, कि पराएदेवताओं के पीछे न हो लेना, तौभी उसने यहोवा की आज्ञा न मानी। 11 और यहोवा ने सुलैमान से कहा, तुझ से जो ऐसा काम हुआ है, और मेरी बन्धाई हुई वाचा और दी हुई वीधि तू ने पूरी नहीं की, इस कारण मैं राज्य को निश्चय तूझ से छीन कर तेरे एक कर्मचारी को दे दूंगा।'' इस प्रकार, प्रभु का क्रोध सुलैमान पर आया और प्रभु ने दूसरे सेवक को सुलैमान का राज्य दे दिया।

आइए हम पढ़ते है अय्यूब 1: 6–12 ''6 एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। 7 यहोवा ने शैतान से पूछा, तू कहां से आता है? शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, कि पृथ्वी पर इधर–उधर घूमते–फिरते और डोलते–डालते आया हूँ। 8 यहोवा ने शैतान से पूछा, क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला मनुष्य और कोई नहीं है। 9 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? 10 क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बान्धा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, 11 और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा। 12 यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना। तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।'' शैतान दुनिया भर में घूमके प्रभु के सामने आया। प्रभु ने शैतान से पूछा, ''क्या तुमने मेरे सेवक अय्यूब को देखा है''। शैतान ने जवाब दिया हां, और प्रभु से कहा कि अय्यूब आपकी आराधना इसलिए करता है क्योंकि आपने उसे बहुत आशीर्वाद दिया है और उसके और उसके परिवार के चारों ओर सुरक्षा का बचाव भी किया है। इस प्रकार, अय्यूब आपके लिए वफादार है। प्रभु, शैतान को अय्यूब की परीक्षा करने के लिए अनुमति देता है, उसे पूरी तरह नष्ट करने के लिए, लेकिन उसकी आत्मा को छूने का अधिकार नहीं देते है। शैतान ने अय्यूब पर हमला किया। अय्यूब को हर तरह से नुकसान उठाना पड़ा, उसने अपना पूरा परिवार, उसकी सारी संपत्ति, जायदाद और जानवरों को भी खो दिया। लेकिन अय्यूब ने कभी भी अपने सभी परीक्षणों और कष्टों के माध्यम से प्रभु के खिलाफ पाप नहीं

किया। अय्यूब 1: 22 ''इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।'' हमारा प्रभु परमेश्वर हमारे ऊपर देख रहा है, हम अपनी लड़ाई कैसे जीतेंगे। हमारे हर काम में, हमें केवल प्रभु की इच्छा पूरी करने की आवश्यकता है। जब हम प्रभु के हर आज्ञा का पालन करते हैं, तो हम अपने जीवन में विजय प्राप्त करेंगे। आइए पढ़ते है प्रकाशितवाक्य 1: 5–6 ''5 और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे: जो हम से प्रेम रखता है, और जिस ने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है। 6 और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन।''

केवल एक ही मार्ग, सत्य और जीवन है। यह यीशु मसीह का मार्ग है।

यह संदेश उन सभी को आशीर्वाद लाए जो इसे पढ़ते हैं और प्रभु की स्तुति हों!

पास्टर सरोजा म.